"भारतीय सिनेमा में हिन्दी साहित्य और स्त्री अस्मिता"

विश्वविद्यालय हिन्दी–विभाग

ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, कामेश्वरनगर, दरभंगा

की पी.एच.डी. उपाधि के लिए प्रस्तावित

शोध – प्रारूप

संकाय–मानविकी

विषय– हिन्दी

शोध निर्देशक
डॉ० आ कुमार राय
सहायक प्राचार्य (हिंदी विभाग)
सी.एम.कॉलेज, दरभंगा
आलोक कुमार
हिन्दी – विभाग
सी.एम.कॉलेज, दरभंगा
ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय,
कामेश्वरनगर, दरभंगा

शोधार्थी
सुनिधि कुमारी
सुनिधि कुमारी
पैट क्रमांक – 22090516
गोपेश्वर कॉलेज कैंपस, हथुआ
पो.+थाना– हथुआ, जिला–गोपालगंज
पिन– 841436

डॉ. आलोक कुमार राय
हिन्दी–विभाग
सी.एम.कॉलेज, दरभंगा
ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय
कमेश्वरनगर, दरभंगा

Email Id- alokroy98@gmail.com
Mob. No.- 9431337525

दिनांक–

पत्रांक–

सहमति–पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि सुनिधि कुमारी, स्नातकोत्तर हिन्दी–विभाग, ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, कामेश्वरनगर, दरभंगा को प्रस्तावित शोध–प्रारूप **''भारतीय सिनेमा में हिन्दी साहित्य और स्त्री अस्मिता''** विषय पर शोध–निर्देशन देना मुझे स्वीकार है। मेरी जानकारी में इस विषय पर शोध–कार्य संपन्न नहीं हुआ है। मैं इनके उज्जवल भविष्य की कामना करता हूँ।

डॉ. आलोक कुमार राय
शोध–निर्देशक

डॉ० आलोक कुमार राय
सहायक प्राचार्य (हिंदी विभाग)
सी०एम०कॉलेज,दरभंगा

1. शोध का विषय–भारतीय सिनेमा में हिन्दी साहित्य और स्त्री अस्मिता

भूमिका–

सिनेमा की प्रभावशीलता और उपयोगिता को देखते हुए इससे संबंधित विषय पर शोध की आवश्यकता बनी हुई है। पूर्व में इस विषय पर कार्य का अभाव रहा है। भारत में सिनेमा के सर्वव्यापी प्रभाव को देखते हुए भारतीय सिनेमा का अध्ययन तो अपेक्षित है ही हिन्दी सिनेमा के व्यापक प्रचार–प्रसार को देखते हुए इसका अध्ययन भी उतना ही जरूरी हो गया है। आज सिनेमा केवल मनोरंजन का साधन मात्र नहीं रह गया है, वह वैचारिकता और सृजनशीलता की अभिव्यक्ति का माध्यम भी बन गया है। समानान्तर सिनेमा इसका संकेतक है। हिन्दी के साहित्यिक सिनेमा की सार्थकता के अनेक आयाम है। उनमें से स्त्री अस्मिता विमर्श को महत्वपूर्ण माना जा सकता है क्योंकि विभिन्न प्रकार के विमर्शों के इस दौर में दलित विमर्श के बाद इसी विमर्श का सर्वाधिक जोर है। भारतीय एवं हिन्दी सिनेमा के सहसंबंध को लक्षित करते हुए, स्त्री विमर्श एवं नारी अस्मिता की दृष्टि से तथ्यों को उजागर कर उनका विश्लेषण व मूल्यांकन शोधप्रद का विशेष ध्येय है। भारतीय सिनेमा पर हिन्दी साहित्य का प्रभाव और स्त्री अस्मिता का प्रश्न, जैसे त्रिआयामी विषय के अर्थ के स्पष्ट कर लेना जरूरी है। इस विषय का संबंध एक साथ ही भारतीय सिनेमा, हिन्दी साहित्य और स्त्री अस्मिता से है। भारतीय सिनेमा व्यापक अर्थ में भारतीय भाषाओं में बनने वाली फिल्मों से है। इसके अन्तर्गत हिन्दी, मराठा, बांग्ला, असमिया, तेलुगू, तमिल, कन्नड़, मलयालम् आदि भाषाओं से जुड़ी फिल्मों से है। उक्त भाषाओं से जुड़ा सिनेमा ही भारतीय सिनेमा की अवधारणा को सामने लाता है। भारतीय सिनेमा कहने का दूसरा आशय उस सिनेमा से भी है जो भारत की किसी एक भाषा में बना सिनेमा है। जैसे– हिन्दी, बांग्ला, आदि भाषाओं में बना सिनेमा हिन्दी भाषा में बनी फिल्में के हिन्दी सिनेमा कहा जाता है। यदि ऐसे सिनेमा का निर्माण हिन्दी साहित्य से जुड़ी कथात्मक रचनाओं के आधार पर किया गया हो तो हिन्दी का साहित्यिक सिनेमा कहला सकता है। लेकिन जब हिन्दी भाषा एंव साहित्यिक

साहित्यिक सिनेमा कहला सकता है। लेकिन जब हिन्दी भाषा एंव साहित्यिक कृतियों से जुड़े सिनेमा को भारतीय सिनेमा के घटक के रूप में परिभाषित किया जाएगा तो वह भारतीय सिनेमा पूरक ईकाई के रूप में ही सार्थकता प्राप्त करेगा। ऐसे सिनेमा के एक की व्यापक शीर्षक दिया जाऐगा। वह होगा भारतीय सिनेमा। यहाँ भारतीय सिनेमा का यही अर्थ स्वीकार किया गया है। हिन्दी भाषा में निर्मित ऐसे हिन्दी साहित्य ने किस रूप में और किस हद तक प्रभावित किया है। यही प्रस्तावित शोध के अध्ययन का विषय है। इसके साथ एक और समस्या जुड़ी है। वह है स्त्री अस्मिता से जुड़े प्रश्नों पर अनुसंधानपरक दृष्टि से विश्लेषण और मूल्यांकन करना। हिन्दी भाषा से जुड़े सिनेमा के हिन्दी की कथा कृतियों के अतिरिक्त हिन्दी उर्दू के गीतों और काव्यात्मक पंक्तियों ने भी प्रभावित किया है। कविता का आधार लय है। गद्य की भी अपनी लय होती है। ऐसी स्थिति में हिन्दी भाषा में निर्मित साहित्यिक फिल्मों से जुड़े गीत और संगीत रचना की महत्वपूर्ण और प्रभावशाली भूमिका को रेखांकित करना आवश्यक प्रतीत होता है। प्रस्तावित शोध की परिधि को ध्यान में रखते हुए हिन्दी साहित्य के इन प्रभावशाली आयामों का भारतीय सिनेमा की अंगीभूत इकाई के रूप में हिन्दी सिनेमा और उससे जुड़े स्त्री प्रश्नों का अध्ययन प्रस्तुत किया जाएगा।

2. शोध विषय की आवश्यकता

भारतीय सिनेमा के विकास की संभावना को देखते उसकी उपयोगी भूमिका को समझने के साथ ही उसकी रचनात्मक, उपयोगितावादी कलात्मक एवं सामाजिक भूमिका को समझना भी आवश्यक प्रतीत होता है। यह कार्य बहुआयामी महत्त्व का होने के साथ ही व्यापक महत्व का भी है। सिनेमा भाव एवं विचार के व्यापक संप्रेषण का सबसे सुलभ और प्रभावशाली माध्यम है। इस दृष्टि से साहित्यिक कृ तियों के समान उपयोगी और महत्वपूर्ण माना जा सकता है। भारतीय भाषाओं के सिनेमा में बांग्ला, तमिल, तेलुगू, मलयालम्, असमिया अदि का महत्वपूर्ण स्थान है। हिन्दी भाषा के सिनेमा का दायरा व्यापक है जबकि हिन्दी के साहित्यिक सिनेमा के

दर्शकों की संख्या सीमित है। प्रस्तावित शोध विषय का निर्धारण इसी आवश्यकता की पूर्ति के लिए किया गया है।

3. शोध विषय का महत्व–

प्रस्तावित शोध विषय का महत्व केवल मनोरंजन के साधन के अध्ययन तक सीमित न होकर रचनात्मक एवं कलात्मक अभिव्यक्ति के माध्यम के अध्ययन की दृष्टि से भी है। अतः यह दोहरे महत्व का विषय है।

इसके साथ ही सिनेमा केवल वैचारिक अभिव्यक्ति का ही माध्यम नहीं है यह रचनात्मक अभिव्यक्ति का भी अत्यन्त सशक्त माध्यम है। ऐसे महत्वपूर्ण विधा को साहित्य जैसे सार्वभौमिक महत्व के विषय के साथ जोड़कर अध्ययन का विषय बनाना अपने आप में महत्वपूर्ण हो जाता है।

भारतीय सिनेमा श्रेष्ठ भाषाओं के कलात्मक एवं साहित्यिक संस्कार के साथ उनकी सांस्कृतिक चेतना की अभिव्यक्ति का साधन है। हिन्दी भाषा का सिनेमा कई धाराओं–उपधाराओं में बँटा हुआ है। यहाँ लोकप्रिय सिनेमा सामानान्तर सिनेमा के साथ ही साहित्यिक सिनेमा की भी धाराएँ मौजूद है। हिन्दी के साहित्यिक सिनेमा के महत्व को भारतीय सिनेमा के व्यापक संदर्भ में मूल्यांकित किये जाने का काम अभी बाकी है। इस दृष्टि से प्रस्तुत विषय महत्वपूर्ण है।

4. पूर्वकृत शोध

भारतीय सिनेमा, हिन्दी साहित्य, हिन्दी सिनेमा और स्त्री अस्मिता जैसे विषयों से संबंधित निम्नलिखित शोध कार्य किये गये हैं–

1. स्त्री अस्मिता के सरोकार एवं 21वीं सदी का हिन्दी सिनेमा, जीवाजी विश्वविद्यालय, 2022
2. भूमण्डलीकृत यथार्थवादी हिन्दी सिनेमा कथानक और फिल्मांकन, पंजाब विश्वविद्यालय, 2020

3. हिन्दी साहित्य ओर सिनेमा के मध्य स्त्री–दृष्टि का अंतर, जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय, 2010
4. हिन्दी सिनेमा और वैश्विक परिदृश्य, लखनऊ विश्वविद्यालय, 2020
5. सांस्कृतिक परिप्रेक्ष में भूमण्डलीकरण और हिन्दी सिनेमा, पॉण्डीचेरी विश्वविद्यालय, 2020
6. नारी केन्द्रित हिन्दी सिनेमा में भारतीय स्त्री, एस.एन.डी.टी. वीमेंस विश्वविद्यालय, 2011
7. स्त्री की बदलती छवियाँ : प्रवासी हिन्दी साहित्यिक फिल्मों और समाज के आईने में : अमेरिका, ब्रिटेन और दक्षिण एशियन समाज के विशेष संदर्भ में, दिल्ली विश्वविद्यालय, 2013

5. शोध के आधार ग्रंथ सूची

1. सिनेमा के चार अध्याय – डॉ0 टी0 शशिधरन, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, संस्करण 2018
2. स्त्री, साहित्य और विश्व सिनेमा– विजय शर्मा, संवाद प्रकाशन, मेरठ, संस्करण 2018
3. हिन्दी सिनेमा का कारवां – शशांक दूबे, संवाद प्रकाशन, संस्करण 2018
4. देवदास से भुवनशोम – विजय पाउलकर
5. लेखक का सिनेमा – कुँवर नारायण
6. हिन्दी फिल्मों का संक्षिप्त इतिहास– दिलचस्प
7. हिंदी सिनेमा : आदि से अनंत– प्रह्लाद अग्रवाल, (चार खंड), इलाहाबाद
8. सिनेमा : कल, आज, कल – विनोद भारद्वाज
9. हिंदी सिनेमा का इतिहास– संजीव श्रीवास्तव
10. राजकपूर : आधी हकीकत आधा फसाना – प्रह्लाद अग्रवाल
11. भारतीय सिने–सिद्धान्त – अनुपम ओझा।

6. शोध की परिकल्पना

भारतीय भाषाओं से जुड़े सिनेमा को भारतीय सिनेमा कहा जा सकता है। जैसे हिन्दी, बांग्ला, तमिल, तेलुगू, मलयालम, कन्नड़, असमिया आदि भाषाओं से जुड़ी साहित्यिक असाहित्यिक सिनेमा को भारतीय सिनेमा कहलाएगा। उदाहरणार्थ चोखेरबाली, अपराजितो, देवी चारूलता, पाथेर पांचाली, मेघे ढके तारा, देवदास, स्वयंवरम् निरमलयम, चिन्यदंबरम, पिराबी, (मलयालम), द्वीपू (कन्नड़), थाई साहेब (कन्नड़), श्यामयी भाई (मराठी), श्वास (मराठी), हरिचंदयी फैक्टरी, शहीद उद्यम सिंह (पंजाबी), मुखामुखम (मलयालम), प्रहलाद (तेलुगु), कालिदास (तेलुगु), मृच्छकटिकम् आदि हिन्दी की साहित्यिक फिल्मों में निम्नलिखित प्रमुख है– रजनी गंधा, सारा आकाश, तीसरी कसम, चित्रलेखा, उसकी रोटी, दुविधा, शतरंज के खिलाड़ी, सदगति, मौसम, नौकर की कमीज, नदिया के पार, तमस आदि।

साहित्य ने सिनेमा को ठोस आधार प्रदान किया है, उसे सृजनात्मकता का वरदान सौंपा है। कल्पनाशीलता का नया आकाश दिया है। साहित्य ने सिनेमा को धरती और आकाश तो दिया ही है, उसकी परिधि को भी विस्तार दिया है। साहित्य की शक्ति से सिनेमा को नयी शक्ति मिली है। सिनेमा ने भी साहित्य की अतिरिक्त सहायता की है। सिनेमा ने साहित्य को जनप्रिय बनाने के साथ ही उसे दृश्यता और भव्यता प्रदान की है। सिनेमा के माध्यम से साहित्य का नवीनीकरण संभव होता है, उसे नये संस्कार में ढालना संभव होता है। सिनेमा साहित्य के नया जन्म दे सकता है।

साहित्य भी सिनेमा को प्रभावित करता है, उसे नयी आकृति और प्रकृति धारण करने में मदद करता है। साहित्य और सिनेमा के सहसंबंध से कालजयी सिनेमा का निर्माण करना संभव हुआ है। पाथेर पांचाली और तीसरी कसम उसके उत्कृष्ट उदाहरण है। सिनेमा के माध्यम से साहित्यिक कृति को नयी अर्थवत्ता और कलात्मक सत्ता प्राप्त होती है। अभिनय कौशल और गीत–संगीत के अभिनव साहचर्य से साहित्यिक कृति के अतिरिक्त संप्रेषणशीलता, संवेदनशीलता और

प्रभावशीलता प्राप्त होती है। साहित्य ने सिनेमा को अमरत्व और स्वत्व प्रदान किया है।

उक्त तथ्यों के आलोक में हिन्दी साहित्य के भारतीय सिनेमा पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन किया जाएगा। खासकर हिन्दी साहित्य ने भारतीय सिनेमा के अंग के रूप में हिन्दी सिनेमा को कितना स्वत्वशील और प्रभावशाली बनाया है, इससे संबंधित सत्य की खोज की जाएगी, स्त्री अस्मिता से संबंधित प्रश्न का हिन्दी साहित्य और हिन्दी सिनेमा–दोनों का गहरा संबंध है। यह हमारे अध्ययन का अत्यन्त महत्वपूर्ण केन्द्रीय विषय है। इसकी गहराई और सूक्ष्मता से जाँच की जाएगी।

7. शोध की प्रविधि

शोध की मुख्य प्रविधि शोधपरक वस्तुनिष्ठ विधि की होगी, लेकिन तथ्यपरक आलोचनात्मक विधि उस अध्ययन की पूरक विधि होगी। यहाँ आनुभविक विधि का भी उपयोग किया जाएगा। अंतरानुशासनिक विधि भी प्रस्तुत शोध में उपयोगी सिद्ध हो सकती है।

8. शोध अध्यायों का विभाजन–

प्रथम अध्याय :	भारतीय सिनेमा : एक परिचयात्मक अध्ययन
द्वितीय अध्याय :	हिन्दी साहित्य से संबंधित सिनेमा : एक परिचयात्मक अध्ययन
तृतीय अध्याय :	भारतीय सिनेमा पर हिन्दी के साहित्यिक सिनेमा का प्रभाव
चतुर्थ अध्याय :	हिन्दी के साहित्यिक सिनेमा में निहित स्त्री अस्मिता के प्रश्न
पंचम अध्याय :	हिन्दी के साहित्यिक सिनेमा का भारतीय सिनेमा पर प्रभाव और उसमें निहित स्त्री अस्मिता के प्रश्न : विश्लेषण एवं मूल्यांकन
षष्ठम् अध्याय :	उपसंहार

9. प्रस्तावित शोध ग्रंथों की सूची

1. सिनेमा और संसार : उदयन वाजपेयी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण 2022
2. सिनेमा सप्तक : अनिरूद्ध शर्मा, सेतु प्रकाशन, नोएडा (उत्तर प्रदेश), सं0 2023
3. सत्यजीत राय, सिनेमा और जीवन : विजय पाडलकर, संवाद प्रकाशन, मरेठ, सं0 2023
4. जिया जले गीतों की कहानियां : गुलजार, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, सं0 2023
5. सारा आकाश : पटकथा : राजेन्द्र यादव, बासु चटर्जी, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, सं0 2007
6. भूमंडलीकरण और सिनेमा में समसामयिक यथार्थ : जवरीमल्ल पाराव, अनुज्ञा बुक्स, दिल्ली, सं0 2022
7. सिनेमा के विविध संदर्भ : डॉ0 सुरभि विप्लव, अनुज्ञा बुक्स, दिल्ली, सं0 2020
8. लोकप्रिय सिनेमा और सामाजिक यथार्थ : जवरीमल्ल पारख, अनुज्ञा बुक्स, दिल्ली, सं0 2020
9. सिनेमा जीवन की पाठशाला : जयप्रकाशन चौकसै, बेन्टेन बुक्स, भोपाल, सं0 2011
10. नये दौर का नया सिनेमा : प्रियदर्शन, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, सं0 2015
11. हिन्दी सिनेमा के गीतकार : जावेद हमीद, अतुल्य पब्लिकेशन्स, दिल्ली, सं0 2019
12. निगाहों के साये : जाँ निसार अख्तर, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, सं0 2020
13. कवि शैलेन्द्र जिन्दगी की जीत में यकीन : प्रहलाद अग्रवाल, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, सं0 2010

14. फिल्म सफर : कल और आज, डॉ0 सुमा एस0, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, सं0 2022

15. सिनेमा के जादूगर : विजय पाडलकर, संवाद प्रकाशन, मेरठ, सं0 2023

16. पश्चिम और सिनेमा : दिनेश श्रीनेत, वाणी प्रकाशन, मेरठ सं0 2012

17. फिल्म निर्देशन : कुलदीप सिन्हा, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, सं0 2019

18. कथाकार कमलेश्वर और सिनेमा : उज्जवल अग्रवाल, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, सं0 2012

पत्र–पत्रिकाएँ–

- आजकल (सिनेमा के सौ वर्ष), सीमा उझा
- आटलुक (हिंदी सिनेमा के सौ साल का इश्क), नीलाभ मिश्र
- तहलका, तरूण जीत तेजपाल
- शुक्रवार, (फिल्म विशेषांक), विष्णु नागर

शोध निर्देशक

डॉ० आलोक कुमार राय
सहायक प्राचार्य (हिंदी विभाग)

डॉ0 आलोक कुमार राय
हिन्दी विभाग
सी. एम. कॉलेज, दरभंगा
ललित नारायण मिथिला
विश्वविद्यालय
कामेश्वरनगर, दरभंगा

शोधार्थी
सुनिधि कुमारी
सुनिधि कुमारी
पैट क्रमांक– 22090516
गोपेश्वर कॉलेज कैम्पस
हथुआ, गोपालगंज
पो0–हथुआ, थाना–हथुआ
841436

ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, कामेश्वरनगर, दरभंगा

"भारतीय सिनेमा में हिन्दी साहित्य और स्त्री अस्मिता"

शोध–सारांश

हिन्दी साहित्य ने भारतीय सिनेमा के अंग के रूप में हिन्दी सिनेमा को गहराई से प्रभावित किया है और अनेक कालजयी फिल्मों का आधार बना है। चित्रलेखा, तीसरी कसम, सूरज का सातवां घोड़ा जैसी फिल्मों को इसी श्रेणी में रखा जाएगा। इसके साथ ही सिने कलाकारों के अभिनय कौशल, नायिकाओं की सशक्त भूमिकाएँ ,गीतों के साथ संगीत के सुखद संयोजन और महान गायकों के गायन ने साहित्य को अतिरिक्त सौन्दर्य से मंडित किया है। साहित्य और सिनेमा से जुड़कर स्त्री अस्मिता से जुड़े प्रश्नों को प्रभावशाली मुखरता प्राप्त हुई है और इन प्रश्नों को साहित्य और सिनेमा के माध्यम से ज्वलंत मुद्दों के रूप में समाज और बुद्धिजीवियों के सामने उठाये जाने का अवसर मिला है। यही समाधानन की दिशा में आगे बढ़ने की पहली शर्त है यही शोध सार है।

शोध निर्देशक
डॉ० आलोक कुमार राय
सहायक प्राचार्य (हिंदी विभाग)
सी.एम.कॉलेज, दरभंगा
डॉ० आलोक कुमार
हिन्दी – विभाग
सी.एम.कॉलेज, दरभंगा
ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय,
कामेश्वरनगर, दरभंगा

शोधार्थी
सुनिधि कुमारी
सुनिधि कुमारी
पैट क्रमांक – 22090516
गोपेश्वर कॉलेज कैंपस, हथुआ
पो.+थाना– हथुआ, जिला–गोपालगंज
पिन– 841436

LALIT NARAYAN MITHILA UNIVERSITY
Kameshwarnagar, Darbhanga (Bihar) 846004

Date: 15.04.2024

CERTIFICATE OF NO-RELATION

This is to certify that Mrs. **Sunidhi Kumari** currently pursing tha Ph.D.Programme under my supervision holding Registration No. Year after qualifying qualifying **PAT-2021-22** in the Department of **Hindi** Faculty of Humanities and whose topic of research is "भारतीय सिनेमा में हिन्दी साहित्य और स्त्री अस्मिता" bears no close relation to me.

This certificate has been issued by me to meet the requirements set by **Clause-9.9** of the Uniform Ordinance and Regulations governing the award of Ph.D. Degree by Universities of Bihar issued by **the Chancellor Secretariat vide Memo No.- BSU 05-2010-2684/GS(I)date 21.09.2017 (as amended up to-date)**

डॉ० आलोक कुमार राय
सहायक प्राचार्य (हिंदी विभाग)
सी०एम०कॉलेज,दरभंगा

Signature of the Supervisor (with date)

Full Name	:	**Dr. Alok Kumar Roy**
Disignation	:	**Assistant Professor**
Address	:	**Dept. of Hindi**
		C. M.College Darbhanga
Email	:	**alokroy98@gmai.com**
Ph No.	:	**9431337525**

The term close relation includes spouse, children, sister, brother, grandchildren, nephew, niece, grandniece, grandnephew, uncle, aunt, first cousin, son-in-law, daughter-in-law and nephew, niece, grandniece, nephew of supervisor's wife.